ग्रामीण अंचलों में भी साहित्य जीवित रह सकता है

महानगरों के विपरीत छोटे कस्बों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों की खुशबू हर कहीं महसूस की जा सकती है। इन जगहों पर सारा समाज किसी न किसी रूप में भागीदार रहता है। भारत के प्राचीनतम जिलों में से एक बिहार के पूर्णिया के आसपास के कोशी अंचल में साहित्य-संस्कृति की एक मजबूत धारा है। और यह धारा यहाँ के जन-जीवन को हरने-गढ़ने वाली कोशी नदी की धारा की तरह ही पूरानी, वेगवती और स्वच्छंद है। ऐसे तो इस क्षेत्र की साहित्यिक प्रतिभा को अंतर्राष्ट्रीय पहचान कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु से मिली। परंतु इसके इतर सैकड़ों नहीं बल्कि हजारों साहित्यकारों एवं कवियों ने इस अंचल के साहित्य को लगातार सींचा है। पूर्णियाँ और आस-पास के क्षेत्रों में साहित्यकारों का काफी प्रभाव है।

यहाँ के रचनाकार यहां के युवा वर्ग को प्रभावित कर रचनाधर्मी कार्यों में लगा देने की क्षमता रखते हैं। इस क्षेत्र के अनेक सांस्कृतिक एवं नाट्य मंच मसलन **आह्वान सांस्कृतिक मंच, विहान सांस्कृतिक मंच, अभिनायक नाट्य मंच, रेणु सांस्कृतिक मंच, भरत नाट्य कला केंद्र, संचेतना, पदक्षेप,** आदि पूरी तरह युवकों द्वारा अपनी जेब खर्च से कड़ी मेहनत-मशक्कत कर चलाया जाता है। इन मंचों में युवा एवं बुजुर्ग दो अलग-अलग तालों पर नहीं थिरकते, बल्कि उनके बीच मणिकांचन सहयोग रहता है। एक दूसरे के बिना वे अधूरे हैं। बुजुर्गों की देखरेख एवं अनुभव के साथ युवा कार्यबल कम संसाधन में भी नियमित एक से एक उत्कृष्ट प्रस्तुति करता रहता है। प्रगतिशील लेखक संघ, साहित्यांचल, हिंदी साहित्य सम्मेलन जैसे मंच यह बखूबी बयान करते हैं कि इस अंचल की मूख्य धारा वस्तुतः साहित्य ही है। यहाँ के साहित्य एवं संस्कृति कर्मियों की मेहनत एवं लगन को देख कर सर सम्मान से झुक जाए, तो आश्चर्य नहीं।

ये लोग सरकारी या व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के फंड के मोहताज नहीं। सुबह से शाम तक पैदल या साइकिल से दोस्तों के समूह में घर-घर, दुकान-दुकान चंदा मांग-मांग कर पैसा जुटाते हैं। तब जाकर एक नाटक या एक सम्मेलन हो पाता है। फिर भी गतिविधि अनवरत चलती है। इसके लिए सिर्फ ये युवक ही नहीं, बल्कि यहाँ के लोग भी साधुवाद के पात्र हैं, जो अनवरत इन नेक गतिविधियों के लिए अपनी तिजोरी खोले रहते हैं। यह सिर्फ चंद सरफिरे युवकों की दास्ताँ नहीं, बल्कि एक पूरा का पूरा सामाजिक चरित्र है। सरस्वती पूजा हो या दुर्गा पूजा हर अवसर पर यहाँ नाटक खेले जाते हैं। छठ में तो नदी किनारे घाट पर बाजाप्ता मंच सजाकर रात भर नाटक खेला जाता है, और इन नाटकों में सामाजिक कुरीतियों एवं शासन व्यवस्था पर करारी चोट की जाती है। सही तौर पर कहा जाए, तो कोशी अंचल के ये साहित्य एवं संस्कृति कर्मी रेत में बिखरे सोने की तरह वे बेशकीमती संसाधन हैं, जिसका समुचित दोहन किया जाना चाहिये। सरकार से तो कुछ भी उम्मीद करना बेवकूफी ही है। पर मीडिया एवं मनारंजन उद्योग तथा एन जी ओ के बढ़ते कद को देखते हुए कहा जा सकता है कि अगर ठीक से यहाँ की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षमता की पैकेजिंग एवं मार्केटिंग की जाए, तो इस क्षेत्र का घर-घर सोना हो सकता है। और इस क्षेत्र की पूरी तस्वीर बदल सकती है। बस जरूरत है तो यहां पूंजी लगाने वाले दूरदर्शी एवं साहसी उद्यमियों की।

संजय कुमार साह
चूनापुर रोड, मधुबनी,
पूर्णियाँ, बिहार।